

*I believe You rose from the dead,  
I receive You right now as my Savior and life,  
Come into me! Fill me with Your life,  
Lord Jesus, I give myself to You for Your purpose.*

## 6. GOD'S FULL SALVATION

After regeneration, a believer needs to be baptized (Mark 16:16). Then God begins the lifelong process of gradually spreading Himself as life from the believer's spirit into his soul (Eph. 3:17). This process, called transformation (Rom. 12:2), requires human cooperation (Phil. 2:12). The believer cooperates by allowing the Lord to spread into his soul until all his desires, thoughts, and decisions become one with those of Christ. Finally, at Christ's return, God will fully saturate the believer's body with His life. This is called glorification (Phil. 3:21). Thus, instead of being empty and damaged in each part, this man is filled and saturated with the life of God. This is God's full salvation! Such a man now expresses God, fulfilling God's plan!

# The Mystery of HUMAN LIFE



# मानव जीवन का रहस्य

**What is the meaning of your life?**

**आपके जीवन का उद्देश्य क्या है?**

**THE CHURCH IN GURUGRAM**



### 6. परमेश्वर का सम्पूर्ण उद्धार

नया जन्म पाने के बाद, एक विश्वासी को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता होती है (मरकुस 16:16)। तब परमेश्वर विश्वासी की आत्मा से उसके प्राण के अन्दर धीरे—धीरे स्वयं को फैलाने की आजीवन प्रक्रिया आरंभ करता है (इफिसियों 3:17)। यह प्रक्रिया रूपान्तरण कहलाती है (रोमियों 12:2), जो मनुष्य के सहयोग की माँग करती है (फिलिप्पियों 2:12)। विश्वासी प्रभु को अनुमति देकर सहयोग करता है कि उसके प्राण के अन्दर वह तब तक फैलता जाए जब तक कि उसकी सब इच्छाएँ, विचार, और निर्णय मसीह की समानता में एक न बन जाएँ। अन्त में, मसीह के दुबारा आगमन पर, परमेश्वर विश्वासी की देह को अपने जीवन के साथ पूरी तरह से संतृप्त कर देगा। यह महिमामय होना कहलाता है (फिलिप्पियों 3:21)। इस प्रकार, प्रत्येक अंग में रिक्तता और क्षतिग्रस्तता के बदले, यह मनुष्य परमेश्वर के जीवन से भर जाता और संतृप्त हो जाता है। यह परमेश्वर का सम्पूर्ण उद्धार है! ऐसा मनुष्य अब परमेश्वर की योजना पूरी करते हुए परमेश्वर को अभिव्यक्त करता है!

*For further information please contact us:*

**अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:**

**The Church in Gurugram  
9717214622 | thechurchingurugram@gmail.com**

**www.thechurchingurugram.in**

**Printed by: Amana Literature**

**www.amanaliterature.in | books@amanaliterature.in**

fulfilling His original plan. In order to accomplish His plan, God first became a man called Jesus Christ (John 1:1,14). Then Christ died on the cross to redeem man (Eph. 1:7), thus taking away his sin (John 1:29) and bringing him back to God (Eph. 2:13). Finally, in resurrection, He became the life-giving Spirit (1 Cor. 15:45b) so that He could dispense His unsearchably rich life into man's spirit (John 20:22; 3:6).

## 5. MAN'S REGENERATION

Since Christ has become the life-giving Spirit, man can now receive God's life into his spirit. The Bible calls this regeneration (1 Pet. 1:3; John 3:3). To receive this life, man needs to repent to God and believe in the Lord Jesus Christ (Acts 20:21; 16:31).

To be regenerated, simply come to the Lord with an open and honest heart and say to Him:

*Lord Jesus, I am a sinner, I need You,*

*Thank You for dying for me,*

*Lord Jesus, Forgive me, cleanse me from all my sins,*

अन्त में, पुनरुत्थान में वह जीवन-दायक आत्मा बना (1 कुरिस्थियों 15:45b) जिससे कि वह मनुष्य की आत्मा में अपना अखोजनीय मूल्यवान जीवन डाल सके (यूहन्ना 20:22; 3:6)।

## 5. मनुष्य का नया जन्म

चूँकि मसीह जीवन-दायक आत्मा बन गया है, इसलिए अब मनुष्य अपनी आत्मा में परमेश्वर का जीवन प्राप्त कर सकता है। बाइबल इसे नये सिरे से जन्म लेना कहती है (1 पतरस 1:3; यूहन्ना 3:3)। इस जीवन को पाने के लिए, मनुष्य को परमेश्वर के सामने मन फिराने और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने की आवश्यकता है (प्रेरितों 20:21; 16:31)।

नया जन्म पाने के लिए सादगी से प्रभु के पास खुले एवं सच्चे हृदय से आएँ और उससे कहें:

प्रभु यीशु, मैं पापी हूँ। मुझे तेरी जरूरत है।

मेरे लिए मरने हेतु तेरा धन्यवाद करता हूँ।

प्रभु यीशु, मुझे क्षमा करा। मुझे मेरे सब पापों से शुद्ध करा।

मैं विश्वास करता हूँ कि तू मृतकों में से जी उठा है।

ठीक अभी मैं तुझको अपने उद्धारकर्ता

और जीवन के रूप में ग्रहण करता हूँ।

मुझ में आ! मुझे अपने जीवन से भर दै।

प्रभु यीशु, मैं तेरे उद्देश्य के लिए अपने आपको तुझे देता हूँ।

# The MYSTERY of HUMAN LIFE

Have you ever wondered why you are living in this world and what is the purpose of your life? There are six keys that unlock this mystery.

## 1. GOD'S PLAN

*And God said, Let Us make man in Our image, according to Our likeness. Gen. 1:26 b*

God desires to express Himself through man (Rom. 8:29). For this purpose, He created man in His own image (Gen. 1:26). Just as a glove is made in the image of a hand to contain a hand, so also man is made in the image of God to contain God. By receiving God as his content, man can express God (2 Cor. 4:7).

## 2. MAN

To fulfill His plan, God made man as a vessel (Rom. 9:21-24). This vessel has three parts; body, soul, and spirit (1 Thes.. 5:23). The body contacts and receives the things of the physical realm. The

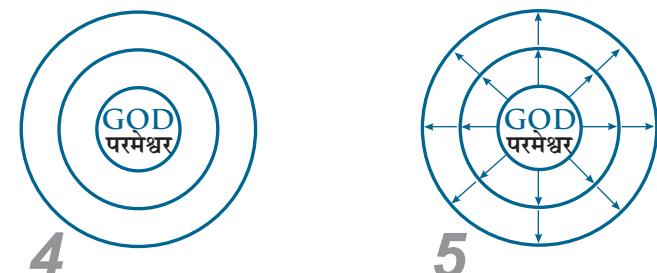
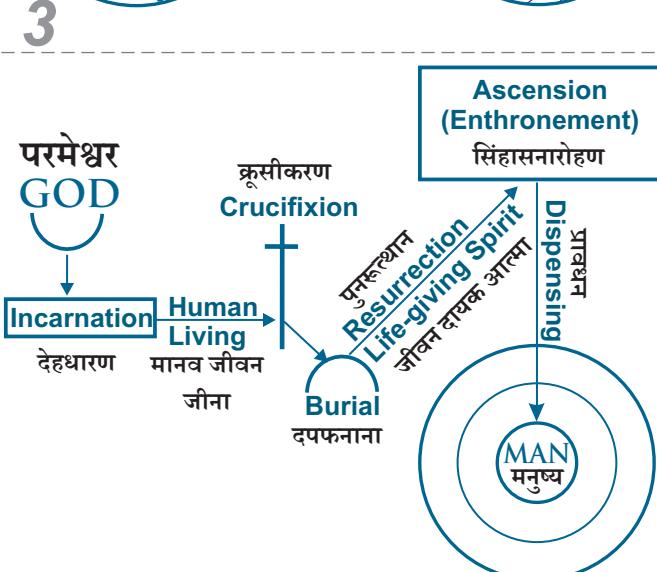
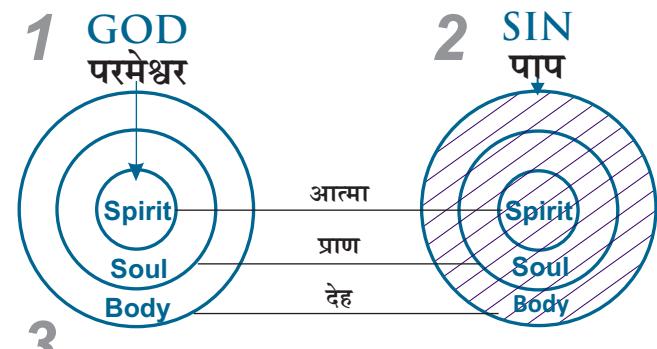
soul, the mental faculty, contacts and receives the things of the psychological realm. And the human spirit, the innermost part of man, was made to contact and receive God Himself (John 4:24). Man was created not merely to contain food in his stomach, or to contain knowledge in his mind, but to contain God in his spirit (Eph.5:18).

## 3. MAN'S FALL

But before man could receive God as life into his spirit, sin entered into him (Rom. 5:12). Sin deadened his spirit (Eph. 2:1), made him an enemy of God in his mind (Col. 1:21), and transmuted his body into sinful flesh (Gen. 6:3; Rom. 6:12). Thus, sin damaged all three parts of man, alienating him from God. In this condition, man could not receive God.

## 4. CHRIST'S REDEMPTION FOR GOD'S DISPENSING

Nevertheless, man's fall did not deter God from



4  
For "whoever calls upon the name of the Lord shall be saved." Romans 10:13  
He who believes and is baptized shall be saved. Mark 16:16b

Believe on the Lord Jesus, and you shall be saved, you and your household. Acts 16:31

5  
व्योंगीं जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। रोमियो 10:13  
जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा मरकुस 16:16b  
प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर,  
तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। प्रेरितों के काम 16:31

## मानव जीवन का रहस्य

क्या कभी आपने आश्र्य किया कि आप इस संसार में क्यों रह रहे हैं और आपके जीवन का उद्देश्य क्या है? छः चाबियाँ हैं जो इस रहस्य को खोलती हैं।

### 1. परमेश्वर की योजना

परमेश्वर की इच्छा है कि मनुष्य के द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त करे, रोमियों (8:29)। इस उद्देश्य के लिए उसने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया (उत्पत्ति 1:26)। जिस प्रकार एक दस्ताना हाथ के स्वरूप में बनाया जाता है कि एक हाथ उस में समा जा सके, उसी प्रकार मनुष्य भी परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया कि परमेश्वर को अपने में समाविष्ट करे। परमेश्वर को अपने अंश के रूप में ग्रहण करने के द्वारा, मनुष्य परमेश्वर को अभिव्यक्त कर सकता है (2 कुरीन्थियों 4:7)।

### 2. मनुष्य

अपनी योजना पूरी करने के लिए, परमेश्वर ने मनुष्य को एक बर्तन के रूप में बनाया (रोमियों 9:21-24)। इस बर्तन के तीन भाग हैं: देह, प्राण, और आत्मा (1 थिस. 5:23)। देह भौतिक परिमण्डल से सम्पर्क करती है और अपनी शारीरिक वस्तुएँ प्राप्त करती हैं। प्राण अर्थात् मानसिक क्षमता मनोवैज्ञानिक परिमण्डल से सम्पर्क करती है और मानसिक वस्तुएँ प्राप्त

करती हैं। और मानवीय आत्मा, मनुष्य के अन्तर्गतम भाग को बनाया गया कि परमेश्वर से सम्पर्क करे और स्वयं परमेश्वर को प्राप्त करे (यूहन्ना 4:24)। मनुष्य को केवल इसलिए नहीं बनाया गया कि अपने पेट में भोजन समाहित करे, अथवा अपने मन में ज्ञान समाहित करे, पर इसलिए कि परमेश्वर को अपनी आत्मा में समाहित करे (इफिसियों 5:18)।

### 3. मनुष्य का पतन

परन्तु इससे पहले कि मनुष्य अपनी आत्मा में जीवन के रूप में परमेश्वर को ग्रहण करता, पाप ने उसमें प्रवेश कर लिया (रोमियों 5:12)। पाप ने उसकी आत्मा को मृतक बना दिया (इफिसियों 2:1), उसके मन में उसे परमेश्वर का शत्रु बना दिया (कुलुसियों 1:21), और उसकी देह को पापपूर्ण देह में बदल दिया (उत्पत्ति 6:3; रोमियों 6:12)। इस प्रकार, पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से दूर करके उसके तीनों भागों को बिगाड़ दिया। इस दशा में, मनुष्य परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता था।

### 4. परमेश्वर के प्रावधान के लिए मसीह का छुटकारा

तथापि, मनुष्य का पतन परमेश्वर को उसकी मूल योजना पूरी करने से रोक नहीं पाया। अपनी योजना को पूरी करने के लिए, सबसे पहले परमेश्वर मनुष्य बना जो यीशु मसीह कहलाया (यूहन्ना 1:1, 14)। तब मनुष्य को छुटकारा देने के लिए (इफिसियों 1:17) मसीह क्रूस पर मरा कि उसके पापों को उठाले (यूहन्ना 1:29) और उसे परमेश्वर तक वापस ला रहा है (इफिसियों 2:13)।